राष्ट्रकूट राजवंश एक प्रमुख भारतीय राजवंश था जिसने लगभग 755 से 975 ईस्वी तक दक्कन क्षेत्र के एक महत्वपूर्ण हिस्से के साथ-साथ मध्य और उत्तरी भारत के कुछ हिस्सों पर शासन किया था। राष्ट्रकूट राजवंश के बारे में मुख्य बातें इस प्रकार हैं:

1. उत्पत्ति एवं उत्थान**:**

- राष्ट्रकूट मूलतः बादामी के चालुक्यों के अधीन एक सामंती राजवंश थे। उन्होंने धीरे-धीरे शक्ति और स्वतंत्रता प्राप्त की और दक्कन में अपना राज्य स्थापित किया।

2. प्रारंभिक शासक**:**

- दंतिदुर्ग को अक्सर दक्कन में राष्ट्रकूट राजवंश को एक स्वतंत्र शक्ति के रूप में स्थापित करने का श्रेय दिया जाता है।
- उनके उत्तराधिकारी, गोविंदा तृतीय ने साम्राज्य के क्षेत्र का विस्तार किया और उसकी शक्ति को मजबूत किया।

3. अमोघवर्ष **I:**

- सबसे प्रसिद्ध राष्ट्रकूट शासकों में से एक अमोघवर्ष प्रथम (814 से 878 ईस्वी तक शासन किया) था।
- वह कला, साहित्य और संस्कृति के संरक्षक थे और उन्होंने जैन धर्म के पुनरुद्धार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- अमोघवर्ष का शासनकाल अक्सर राष्ट्रकूट शक्ति और प्रभाव का शिखर माना जाता है।

4. कला और संस्कृति में योगदान**:**

- राष्ट्रकूटों ने भारतीय कला और संस्कृति में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- वे मंदिर वास्तुकला के संरक्षण के लिए जाने जाते थे, और उनके शासन के दौरान कई मंदिरों का निर्माण किया गया था, जिसमें एलोरा का प्रसिद्ध कैलाश मंदिर भी शामिल था।

5. गिरावट और विखंडन**:**

- अमोघवर्ष के शासनकाल के बाद, आंतरिक संघर्ष और बाहरी खतरों का सामना करते हुए, राष्ट्रकूट साम्राज्य का पतन शुरू हो गया।
- साम्राज्य कई छोटे राज्यों में विभाजित हो गया, जिसमें कई राष्ट्रकूट शाखाएं विभिन्न क्षेत्रों पर शासन कर रही थीं।

6. चालुक्य-चोल संघर्ष**:**

- राष्ट्रकूट अपने बाद के काल में चोलों और चालुक्यों के साथ संघर्ष में शामिल थे।
- चोल शासक राजराज प्रथम ने 949 ई. में तक्कोलम की लड़ाई में राष्ट्रकूटों को हराया, जो एक महत्वपूर्ण मोड़ था।

7. विरासत**:**

- राष्ट्रकूटों ने वास्तुकला, साहित्य और सांस्कृतिक योगदान के मामले में एक स्थायी विरासत छोड़ी।
- उनके वास्तुशिल्प चमत्कार, जैसे कैलाश मंदिर और एलोरा में जैन गुफा मंदिर, यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल हैं।
- कन्नड़ कविता सहित राष्ट्रकूट काल की साहित्यिक कृतियों का अध्ययन और उत्सव जारी है।

8. राजवंश का अंत**:**

- राष्ट्रकूट राजवंश धीरे-धीरे कमजोर और खंडित हो गया, जिससे अंततः 10वीं शताब्दी में इसका पतन हो गया।
- राजवंश प्रभावी रूप से 975 ईस्वी में समाप्त हो गया जब चालुक्य शासक तैलपा द्वितीय ने राष्ट्रकूट राजा खोटिगा को हराया।